काफी गायन विद्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्रुति होड़ा

काफी गायन में सरल जीवन, भागवत प्रेम, आत्मा की शुद्धता और चिरस्थायी आन्नद व सौभाग्य की प्राप्ति, ईश्वर के सिवाय कुछ नही हैं, ईश्वर के सिवाय किसी का अस्तित्व नही हैं धार्मिक सहिष्णुता की भावना का विकास तथा अनेक सामाजिक सांस्कृतिक गुणों के बीच संश्लेषण की प्रकिया के सूत्रपात पर जोर दिया गया है। काफी का एक और रूप भी है जिसमें इस विद्या को अनिबद्ध शैली में बिना वाद्यों और ताल के पाठ की तरह भी गाया जाता है।